परमात्म ऊर्जा

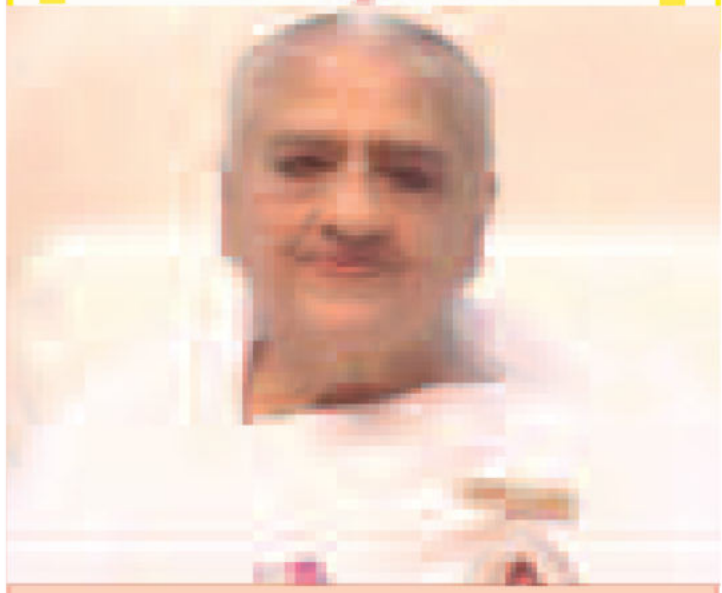

सेवा का सम्बन्ध अर्थात् त्याग और तपस्वी रूप। सच्ची सेवा के लक्षण यही त्याग और तपस्या है। ऐसे ही व्यवहार में भी डायरेक्शन प्रमाण निमित्त मात्र शरीर निर्वाह लेकिन मूल आधार आत्मा का निर्वाह, शरीर निर्वाह के पीछे आत्मा निर्वाह भूल नहीं जाना चाहिए। व्यवहार करते शरीर निर्वाह और आत्म निर्वाह दोनों का बैलेंस हो। नहीं तो व्यवहार माया जाल बन जायेगा। ऐसी जाल जो जितना बढ़ाते जायेंगे उतना फंसते जायेंगे। धन की वृद्धि करते हुए भी याद की विधि भूलनी नहीं चाहिए। याद की विधि और धन की वृद्धि दोनों साथ-साथ होनी चाहिए। धन की वृद्धि के पीछे विधि को छोड़ नहीं देना है। इसको कहा जाता है लौकिक स्थूल कर्म भी कर्मयोगी की स्टेज में परिवर्तन करो। सिर्फ कर्म करने वाले नहीं लेकिन कर्मयोगी हो।

कर्म अर्थात् व्यवहार योग अर्थात् परमार्थ। परमार्थ अर्थात् परमपिता की सेवा अर्थ कर रहे हैं। तो व्यवहार और परमार्थ दोनों साथ साथ रहें। इसको कहा जाता है श्रीमत पर चलने वाले कर्मयोगी। व्यवहार के समय परिवर्तन क्या करना है? मैं सिर्फ व्यवहारी नहीं लेकिन व्यवहारी और परमार्थी अर्थात् जो कर रहा हूँ वह ईश्वरीय सेवा अर्थ कर रहा हूँ। व्यवहारी और परमार्थी कम्बाइंड हूँ। यही परिवर्तन संकल्प सदा स्मृति में रहे तो मन और तन डबल कमाई करते रहेंगे। स्थूल धन भी आता रहेगा। और मन से अविनाशी धन भी जमा होता रहेगा। एक ही तन द्वारा एक ही समय मन और धन की डबल कमाई होती रहेगी। तो सदा यह याद रहे कि डबल कमाई करने वाला हूँ। इस ईश्वरीय सेवा में सदा निमित्त मात्र का मंत्र व करनहार की स्मृति का संकल्प सदा याद रहे। करावनहार भूले नहीं। तो सेवा में सदा निर्माण ही निर्माण करते रहेंगे। आगे चलो, आगे चल अनेक प्रकार के व्यक्ति और वैभव अनेक प्रकार की वस्तुओं से सम्पर्क करते हो। इसमें भी सदा व्यक्ति में व्यक्त भाव के बजाए आत्मिक भाव धारण करो। वस्तुओं व वैभवों में अनासक्त भाव धारण करो तो वैभव और वस्तु अनासक्त के आगे दासी के रूप में होगी और आसक्त भाव वाले के आगे चुम्बक की तरफ फंसाने वाली होगी। जो छुड़ाना चाहो तो भी छूट नहीं सकते। इसलिए व्यक्ति और वैभव में आत्म भाव और अनासक्त भाव का परिवर्तन करो।

कोई भी पुरानी दुनिया के आकर्षणमय दृश्य अल्पकाल के सुख के साधन यूज़ करते हो व देखते हो तो उन साधनों व दृश्य को देख कहाँ-कहाँ साधना को भूल साधन में आ जाते हो। साधनों के वशीभूत हो जाते हो। साधनों के आधार पर साधना - ऐसे समझो जैसे रेत के फाउंडेशन के ऊपर बिल्डिंग खड़ी कर रहे हो। उसका क्या हाल होगा? बार-बार हलचल में डगमग होंगे। गिरा कि गिरा यही हालत होगी। इसलिए यही परिवर्तन करो कि साधन विनाशी और साधना अविनाशी। विनाशी साधन के आधार पर अविनाशी साधना हो नहीं सकती। साधन निमित्त मात्र हैं, साधना निर्माण का आधार है। तो साधन को महत्त्व नहीं दो, साधना को महत्त्व दो। तो सदा ये समझो कि मैं सिद्धि स्वरूप हूँ न कि साधन स्वरूप। साधना सिद्धि को प्राप्त कराएगी। साधनों की आकर्षण में सिद्धि स्वरूप को नहीं भूल जाओ। हर लौकिक चीज़ को देख, लौकिक बातों को सुन, लौकिक दृश्य को देख, लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन करो अर्थात् ज्ञान स्वरूप हो हर बात से ज्ञान उठाओ। बात में नहीं जाओ, ज्ञान में जाओ तो समझा,

टुंडला-उ.प्र.। श्रावण मास की हरियाली अमावस्या को ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'कल्प तरु' प्रोजेक्ट के तहत गांव नगला सिकन्दर में माताओं-बहनों के साथ अनेक प्रकार के औषधियों के पौधे लगाए गए।

कथा सरिता

वस्तु का मूल्य कब!

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक बूढ़ा व्यक्ति रहता था। उसके दो बेटे थे। बूढ़ा वस्तुओं के उपयोग के मामले में कंजूस था और उन्हें बचा-बचा कर उपयोग किया करता था। उसके पास एक पुराना चांदी का पात्र था। वह उसकी सबसे मूल्यवान वस्तु थी। वह उसे संभालकर संदूक में बंद कर रखता था। उसने सोच रखा था कि सही अवसर आने पर ही उसका उपयोग करेगा। एक दिन उसके यहाँ एक संत आये। जब उन्हें भोजन परोसा जाने लगा, तो एक क्षण को बूढ़े व्यक्ति के मन में विचार आया कि क्यों न संत को चांदी के पात्र में भोजन परोसूं? लेकिन अगले ही क्षण उसने सोचा कि मेरा चांदी का पात्र बहुत कीमती है। गाँव-गाँव भटकने वाले एक संत के लिए उसे क्या निकालना! जब कोई राजसी व्यक्ति मेरे घर पधारेगा, तब यह पात्र निकालूंगा। यह सोचकर उसने पात्र नहीं निकाला। कुछ दिनों बाद उसके घर राजा का मंत्री भोजन करने आया। उस समय भी बूढ़े व्यक्ति ने सोचा कि चांदी का पात्र निकाल लूं। किंतु फिर उसे लगा कि ये तो राजा का मंत्री है। जब राजा स्वयं मेरे घर भोजन करने पधारेंगे, तब अपना कीमती पात्र निकालूंगा।

कुछ दिनों के बाद स्वयं राजा उसके घर भोजन के लिए पधारे। राजा उसी समय पड़ोसी राज्य से युद्ध हार गए थे और उनके राज्य के कुछ हिस्से पर पड़ोसी राजा ने कब्जा कर लिया था। भोजन परोसते समय बूढ़े व्यक्ति ने सोचा कि अभी-अभी हुई पराजय से राजा का गौरव कम हो गया है। मेरे पात्र में किसी गौरवशाली व्यक्ति को ही भोजन करना चाहिए। इसलिए उसने चांदी का पात्र नहीं निकाला।

इस तरह उसका पात्र बिना उपयोग के पड़ा रहा। एक दिन बूढ़े व्यक्ति की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद उसके बेटे ने उसका संदूक खोला। उसमें उसे काला पड़ चुका चांदी का पात्र मिला। उसने वह पात्र अपनी पत्नी को दिखाया और पूछा, "इसका क्या करें?" पत्नी ने काले पड़ चुके पात्र को देखा और मुँह बनाते हुए बोली, "अरे इसका क्या करना है। कितना गंदा पात्र है। इसे कुत्ते को भोजन देने के लिए निकाल लो।"

उस दिन के बाद से घर का पालतू कुत्ता उस चांदी के पात्र में भोजन करने लगा। जिस पात्र को बूढ़े व्यक्ति ने जीवन भर किसी विशेष व्यक्ति के लिए संभालकर रखा, अंततः उसकी ये गत हुई।

सीख : किसी वस्तु का मूल्य तभी है, जब वह उपयोग में लाई जा सके। बिना उपयोग के बेकार पड़ी कीमती वस्तुओं का भी कोई मूल्य नहीं। इसलिए यदि आपके पास कोई वस्तु है, तो यथा समय उसका उपयोग कर लें।

गुणवान कौन?

गाँव के पनघट पर चार औरतें पानी भरने आईं। पानी भरते-भरते वे एक-दूसरे से बातें करने लगीं। चारों के एक-एक पुत्र थे। बातों-बातों में उन्होंने अपने पुत्रों के गुणों का बखान करना प्रारंभ कर दिया। पहली औरत बोली, "मेरा पुत्र बहुत सुरीली बांसुरी बजाता है। जो भी उसकी बांसुरी सुनता है मंत्रमुग्ध हो जाता है। मैं ऐसा गुणवान पुत्र पाकर बहुत प्रसन्न हूँ।"

दूसरी औरत बोली, "मेरा पुत्र बहुत बड़ा पहलवान है। इस गाँव में ही नहीं, बल्कि दूर-दूर के गाँव में उसकी बहादुरी का डंका बजता है। ऐसा गुणवान पुत्र भगवान सबको दें।"

तीसरी औरत कहाँ पीछे रहती, वह बोली, "मेरा पुत्र कुशाग्र बुद्धि है। उससे अधिक बुद्धिमान इस पूरे गाँव में नहीं। लोग अपनी समस्यायें लेकर उसके पास आते हैं। मैं ऐसा पुत्र पाकर धन्य हो गई।"

चौथी औरत ने सबकी बातें सुनी, लेकिन कहा कुछ भी नहीं। इस पर वे औरतें उससे कहने लगी, "बहन! तुम भी तो कुछ कहो ना! तुम्हारे पुत्र में क्या गुण हैं? कोई न कोई गुण तो उसमें अवश्य होगा।" वह औरत बोली, "क्या कहूं बहनों? मेरे पुत्र में तुम्हारे पुत्रों की तरह कोई गुण नहीं है।" उसकी बात सुनकर तीनों औरतों ने गर्व में अपना सिर उठा लिया। कुछ देर में सबने पानी भर लिया और वापस जाने के लिए अपना-अपना घड़ा उठाने लगी। उसी समय पहली औरत का पुत्र हाथ में बांसुरी लिए वहाँ से गुज़रा, उसने देखा कि उसकी माँ पानी से भरा घड़ा नहीं उठा पा रही है, किंतु वह यह अनेदखा कर बांसुरी बजाते हुए वहाँ से चला गया।

दूसरी औरत का पहलवान पुत्र कुछ ही दूरी पर मुद्गर घुमा रहा था। उसकी माँ कुएं से घड़ा उठाकर जैसे ही उतरी, उसका पैर फिसल गया। किसी प्रकार वह संभल गई। किंतु पहलवान पुत्र अपनी माँ को नज़र उठा कर देखने के बाद भी उसके पास नहीं आया और अपनी कसरत में लगा रहा।

तीसरी औरत का पुत्र भी वहाँ से किताब पढ़ते हुए निकला। उसकी माँ ने उससे कहा, "पुत्र! मैं दोनों हाथों से घड़ा पकड़े हुए हूँ। ये रस्सी ज़रा मेरे कंधे पर डाल दे।" लेकिन वह अपनी माँ की बात अनसुनी कर वहाँ से चला गया। तभी चौथी औरत का पुत्र वहाँ आया। अपनी माँ के सिर पर घड़ा देख वह उसके पास गया और उसके सिर पर से घड़ा उतारकर अपने सिर पर रखकर चलने लगा। कुएं के पास बैठी एक बुढ़िया यह सब देख-सुन रही थी। वह बोल पड़ी,"मुझे तो यहाँ बस एक ही गुणवान पुत्र नज़र आ रहा है। वही जो अपने सिर पर घड़ा लिए जा रहा है। माता-पिता की सेवा करने वाले पुत्र से गुणवान पुत्र भला कौन हो सकता है।"

सीख : गुणवान वही है, जो अपने माता-पिता की सेवा करे और साथ ही सबकी सहायता के लिए तत्पर रहे।